परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय, इन्दौर

शैक्षणिक सत्र 2020-21

कक्षा - आठ विषय - हिन्दी

वसंत भाग - ३

पाठ 14 - अकबरी लोटा

मौड्यूल- 2

प्रस्तुतकर्त्री

मंजू देवी, प्र. स्ना.अ.वरि.मान (हिन्दी / संस्कृत)

वसंत

भाग 3

कक्षा 8 के लिए
हिंदी की पाठ्यपुस्तक

अकबरी लोटा

लेखक परिचय

कक्षा 8
पाठ - 14

कहानी – अकबरी लोटा

लेखक : अन्नपूर्णानन्द वर्मा
जन्म : 21 सितंबर 1895
मृत्यु : 04 दिसंबर 1962
स्थान : काशी (उत्तर प्रदेश)

पाठ का सारांश

पंडित अन्नपूर्णानद जी ने इस कहानी में बताया है कि लाला झाऊलाल नामक व्यक्ति बहुत अमीर नहीं है पर उन्हें गरीब भी नहीं कहा जा सकता। पत्नी के ढाई सौ रूपए माँगने तथा अपने मायके से लेने की बात पर अपनी इज्जत के लिये सात दिन में रुपये देने की बात की।

पाँच दिन बीतने पर अपने मित्र बिलवासी को यह घटना सुना कर पैसे की इच्छा रखी पर उस समय उनके पास रूपए न थे। बिलवासी जी ने उसके अगले दिन आने का वादा किया जब वह समय पर न पहुँचे तो झाऊलाल चिंता में छत पर टहलते हुए पानी माँगने लगे। पत्नी द्वारा लाये हुए नापसंद लोटे में पानी पीते हुए लोटा नीचे एक अंग्रेज पर गिर गया।

अंग्रेज एक लंबी चौड़ी भीड़ सहित आँगन में घुस गया और लोटे के मालिक को गाली देने लगा। बिलवासी जी ने बड़ी चतुराई से अंग्रेज को ही मूर्ख बनाकर उसी लोटे को अकबरी लोटा बताकर उसे 500 रूपए में बेच दिया। इससे रुपयों का इंतजाम भी हो गया और झाऊलाल की इज्जत भी बच गई। इससे लाला बहुत

शब्द - अर्थ

करीब - लगभग

दशा - हालत

प्रतिष्ठा - इज्जत

साख - विश्वास

संयोग - भाग्य से

अदब - मान देना

मुँडेर - छत का किनारा

सनसनाया - घबराहट

प्रबंध - इंतजाम

सुशिक्षित - पढ़ा लिखा

विपदा - कठिनाई

गढ़न - बनावट

जतन - प्रयत्न

खुरापाती - शरारती

शब्द - अर्थ

आकर्षण - खिंचाव

शख्स - आदमी

डेंजरस - खतरनाक

हिरासत - कैद

रद्दी - बेकार

कोश - खजाना

प्रकांड - श्रेष्ठ

निरीह - कमजोर

क्रिमिनल - मुजरिम

इजाजत - आज्ञा

विज्ञ - बुद्धिमान

गनीमत - सन्तोष करने योग्य

अकबरी लोटा

आसानी से समझिए

पाठ की व्याख्या

नहीं, मेरी समझ में --तक इसके दाम दे सकता हूँ।

बिलवासी जी के लाला को पागल कहने पर अंग्रेज कहता है कि उसकी समझ में लाला एक बहुत बड़ा मुज़रिम है। उस समय लाला को देखने से लग रहा था कि अगर परमात्मा ने लाला झाऊलाल की आँखों को इस समय देखने के साथ खाने की भी शक्ति दे दी होती तो यह निश्चय है कि अब तक बिलवासी जी को वे अपनी आँखों से खा चुके होते। क्योंकि लाला की समझ में नहीं आ रहा था कि बिलवासी जी लाला के मित्र हैं या अंग्रेज के।

जब बिलवासी जी लाला का साथ देने के बजाय उस अंग्रेज का साथ दे रहे थे तो लाला को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि बिलवासी जी को इस समय क्या हो गया है? अंग्रेज ने बिलवासी जी से पूछा तो अब उसे क्या करना चाहिए? तो इस पर पं .बिलवासी ने अंग्रेज व्यक्ति को सलाह दी कि पुलिस थाने में रिपोर्ट कर दो और लाला के खिलाफ शिकायत दर्ज कर दो ताकि इस आदमी को तुरंत ही गिरफ्तार कर लिया जाए। इस सलाह पर अंग्रेज पूछता है कि पुलिस स्टेशन कहाँ है? बिलवासी जी कहते हैं पास ही है और अंग्रेज कहे तो वह उन्हें वहाँ तक पहुँचा दें, और अंग्रेज भी कहता है कि तुरंत चलते हैं और इसे सजा दिलवाते हैं। अब बिलवासी जी अंग्रेज को कहते है कि वह अभी तुरंत उसके साथ पुलिस थाने चलेंगे, अगर आपकी इजाज़त हो तो पहले इस लोटे को लाला से खरीद लेना चाहते हैं। फिर बिलवासी जी लाला से पूछते हैं कि क्या वह इस लोटे को बेचने के लिए तैयार

लाला झाऊलाल तो ---------- म्यूज़ियम परेशान हैं।

लाला झाऊलाल अपने मित्र की इस तहर की योजना को चुपचाप खड़े देख रहे थे और अंग्रेज व्यक्ति ने बिलवासी जी से उस बेकार बदसूरत लोटे की इतनी बड़ी कीमत देने के पीछे की वजह पूछी कि वे उस बदसूरत लोटे के पचास रुपये क्यों दे रहे हैं?

बिलवासी जी बहुत चतुर और समझदार व्यक्ति हैं वह अंग्रेज को अपने झाँसे में लेते हैं और उन्हें कहते है कि मैं तो समझ रहा था कि आप बहुत ज्ञानी हैं बहुत ही पढ़े-लिखे व्यक्ति हैं आप अवश्य ही इस बात को समझते होंगे।

जब बिलवासी जी ने वह बदसूरत लोटा खरीदने की बात की तो अंग्रेज ने आगे जानना चाहा कि आखिर बात क्या है वह यह बदसूरत लोटा क्यों खरीदना चाहता है। अंग्रेज की उत्सुकता देख कर बिलवासी जी उससे कहते हैं कि उसे लगता है यह एक ऐतिहासिक लोटा है ऐसा उसे पूरा विश्वास है और यह वह प्रसिद्ध अकबरी लोटा है जिसकी तलाश में संसार भर के म्यूजियम परेशान हैं और दुनिया भर के लोगों को अपने म्यूजियम में उसे रखने की चाहत है।

''यह बात?''---------- दाम देकर खरीद ले जाएँ ।

बिलवासी जी की कहानी पर अंग्रेज हैरान हो गया और उस लोटे के बारे में और ज्यादा जानना चाहा तो बिलवासी जी ने कहानी आगे बढ़ाते हुए कहा कि यह सोलहवीं शताब्दी की बात है। जब बादशाह हुमायूँ शेर-शाह से हार कर अपनी जान बचा कर भागा था तो सिंध के रेगिस्तान में मारा-मारा फिर रहा था। उस समय में उसे प्यास लगी और प्यास से उसकी जान निकली जा रही थी। उस समय एक ब्राह्मण ने इसी लोटे से पानी पिलाकर उसकी जान बचाई थी। बिलवासी जी ने बहुत सुन्दर कहानी का वर्णन किया जिससे अंग्रेज बहुत ही प्रभावित हो गया था और उस लोटे की ओर आकर्षित भी हो गया।।

आगे बिलवासी जी कहते हैं कि पता नहीं यह लोटा इस आदमी के पास कहाँ से आ गया? अगर म्यूजियम वालों को पता चले तो अच्छा-ख़ासा दाम देकर खरीद ले जाएँ क्योंकि उन्हें ऐसी चीजों की बहुत जरूरत होती है।

इस विवरण को सुनते---------- यह मेरा हक है।

जब अंग्रेज ने बिलवासी जी के मुँह से यह कहानी सुनी तो उसके अन्दर लोभ जाग गया और साथ-ही-साथ वह आश्चर्य चकित हो गया और उनकी आँखें जो कि पहले छोटी थी, कौड़ी के आकार थी, अब बढ़कर पकौड़ी के आकार की हो गई, उसने बिलवासी जी से पूछा कि आप इस लोटे को खरीदकर क्या करेंगे।

जब अंग्रेज ने बिलवासी जी से पूछा कि वे इस लोटे को खरीद कर क्या करेंगे तो बिलवासी जी बोले कि उन्हें पुरानी और ऐतिहासिक चीजों को संग्रह करने का शौक है। उनके ऐसा कहने पर अंग्रेज भी तुरंत बोला कि उसे भी पुरानी और ऐतिहासिक चीजों के संग्रह करने का शौक है। उसने बताया कि जिस समय यह लोटा उसके ऊपर गिरा था, उस समय भी वह उस दुकान से पीतल की कुछ पुरानी मूर्तियाँ खरीद रहा था। बिलवासी जी अंग्रेज की बात सुन कर बोले कि चाहे जो भी हो वे ही उस लोटे को खरीदेंगे। अंग्रेज ने कह कि वे उस लोटे को नहीं खरीद सकते क्योंकि उस

हक है---------- पास ढाई सौ से अधिक नहीं हैं।”

अब बिलवासी जी अंग्रेज से बहस करने लगे कि तुम्हारा कैसे अधिकार हो गया? इस पर अंग्रेज जवाब देता है कि बहुत कारणों से उसका अधिकार सिद्ध होता है। फिर अंग्रेज ने पूछा कि यह बताइए कि उस लोटे के पानी ने किसका स्नान करवाया? बिलवासी जी ने उत्तर दिया कि आपका। अंग्रेज ने फिर पूछा कि वह किसके पैर पर गिरा? बिलवासी जी ने कहा आपके। अंग्रेज ने पूछा कि अँगूठा उसने किसका कुचला?बिलवासी जी ने उत्तर दिया कि आपका। अंग्रेज ने कहा कि इसीलिए उसे खरीदने का अधिकार उसी का है।

बिलवासी जी अंग्रेज अंग्रेज से कहते हैं कि जो भी ज्यादा दाम लगाएगा, वह ले जाएगा। बिलवासी जी की यह बात अंग्रेज ने मान ली और कहा कि वे इस लोटे के पचास रुपए लगा रहे थे, वह सौ देगा। फिर बिलवासी जी कहते है कि वे सौ देंगे, अंग्रेज और अधिक बोली लगाते हुए बोला कि वह दो सौ देगा। बिलवासी जी ने ढाई सौ के नोट लाला झाऊलाल के आगे फेंकते हुए कहा कि वे ढाई सौ रुपए देंगे।

जब बिलवासी जी ने ढाई सौ रूपए लाला के सामने फेंके तो अंग्रेज भी जोश में आ गया और बोला बिलवासी जी ढाई सौ देते हैं तो वह पाँच सौ देगा । बिलवासी जी अफ़सोस के साथ अपने रुपये उठाने लगे, जैसा कि बिलवासी जी को सच में बहुत बुरा लग रहा हो और वे अंग्रेज की ओर देखकर कहने लगे कि यह लोटा आपका हुआ, ले जाइए, क्योंकि अब बिलवासी जी के पास ढाई सौ से अधिक नहीं हैं।

यह सुनना था ---------- टँगा रहता था।

अंग्रेज यह सुनते ही कि लोटा उसका हुआ, उसका चेहरा प्रसन्नता से भर उठा। उसने झपटकर लोटा लिया और बोला कि अब वह ख़ुशी-ख़ुशी अपने देश लौटकर जाएगा। उसने यह भी जिक्र किया कि मेजर डगलस की बड़ी-बड़ी बातें सुनते-सुनते उसके कान पक गए थे। मेजर डगलस का नाम सुनते ही बिलवासी जी ने प्रश्न किया कि ये मेजर डगलस कौन हैं?

अंग्रेज मेजर डगलस के बारे में बताते हुए कहते हैं कि वे उसके पड़ोसी हैं। उन्हें भी पुरानी चीजें इकट्ठे करने का शौक है और उसे भी । और दोनों में मुकाबला होता रहता है कि कौन किससे ज्यादा चीजें इकट्ठी करेगा। वे हिंदुस्तान आए थे और यहाँ से जहाँगीरी अंडा ले गए थे और ढींगे मार रहे थे कि देखो वे कितनी अदभूत चीज लेकर आए हैं।

बिलवासी जी जहाँगीरी अंडा के नाम सुन कर आश्चर्य के साथ अंग्रेज से उसके बारे में पूछते हैं। तो अंग्रेज ने उत्तर दिया कि मेजर डगलस ने समझ रखा था कि हिंदुस्तान से वे ही अच्छी चीजें ले सकते हैं। और कोई नहीं ला सकता।

यह सुनना था ---------- टँगा रहता था।

इस बार अंग्रेज कहता है कि वे जानते होंगे कि एक कबूतर ही नूरजहाँ और जहाँगीरी के प्रेम का कारण बना था। जहाँगीर के पूछने पर कि, उसका एक कबूतर नूरजहाँ ने कैसे उड़ जाने दिया, नूरजहाँ ने उसके दूसरे कबूतर को उड़ाकर बताया था, कि ऐसे।

नूरजहाँ के इस भोलेपन पर जहाँगीर दिलोजान से निछावर हो गया अर्थात् उनपर मोहित हो गए। उसी क्षण से उसने नूरजहाँ के आगे अपने आप को सौंप दिया। कबूतर का यह एहसान वह नहीं भूला क्योंकि उस कबूतर की वजह से ही जहाँगीर नूरजहाँ से मिला था । उसके एक अंडे को बड़े जतन से अपने पास सहेज कर रखा था। एक हाँडी में, वह उसके सामने टँगा रहता था।

बाद में वही अंडा "जहाँगीरी अंडा" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसी को मेजर डगलस ने पिछले साल दिल्ली में एक मुसलमान सज्जन से तीन सौ रुपये में खरीदा। वह इसी बात की ढींगे अंग्रेज व्यक्ति के समाने हाँक रहे थे। अब बिलवासी जी को जहाँगीरी अण्डे की पूरी कहानी ज्ञात हो गई थी। अब अंग्रेज बड़ी ख़ुशी से बोला कि अब उनका पडोसी उनके आगे बड़ी-बड़ी बातें नहीं कर सकेगा क्योंकि अब उसके पास भी अकबरी लोटा है और उसका अकबरी लोटा उसके पडोसी के जहाँगीरी अंडे से भी एक पुश्त पुराना है।

इस रिश्ते से तो ---------- गिनकर सहेज लीजिए।

अंग्रेज की बात सुन कर बिलवासी जी कहा कि इस रिश्ते से तो आपका लोटा आपके पड़ोसी के उस अंडे का बाप हुआ। अंग्रेज ने लाला झाऊलाल से वह लोटा पाँच सौ रुपये में खरीद लिया और अपने रास्ते चलु पड़ा। लाला झाऊलाल का चेहरा इस समय देखते बनता था। लाला झाऊलाल के हाथ कहाँ तो ढाई सौ रुपये का इंतजाम नहीं कर पा रहे थे और अब उन्हें पाँच सौ रुपये मिल गए थे तो उनकी खुशी का ठिकाना ही नहीं था। ऐसा लग रहा था कि उसके चेहरे पर छह दिन की बढ़ी हुई दाढ़ी का एक-एक बाल अपनी खुशी जाहिर कर रहा था उनके चेहरे पर प्रसन्नता साफ झलक रही थी। ।

जब लाला ने बिलवासी जी से पूछा कि वह पैसे कहाँ से लाए हैं तो बिलवासी जी ने उत्तर देते हुए कहा कि इस रहस्य की बात को उनके सिवाए केवल उनका ईश्वर ही जानता है। अगर उनको जानना है तो ईश्वर से पूछ लें क्योंकि वे तो लाला को नहीं बताने वाले। बिलवासी जी आगे बढ़ कर कहीं जाने लगे तो झाऊलाल ने कहा । अभी तो उन्हें उनसे दो घंटे का काम बाकी है। बिलवासी ने पूछा कि ऐसा क्या काम है जिसमें दो घण्टे लगने हैं।

तब लाला जवाब देते हैं कि अभी वह उनकी पीठ ठोककर शाबाशी दूँगा, जिसमें एक घंटा तो लग ही जाएगा। फिर गले लगाकर धन्यवाद दूँगा, एक घटा तो उसमें भी लग जाएगा। अब लाला झाऊलाल की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था वह अपने मित्र की पीठ ठोककर उसको शाबाशी देकर और उसका धन्यवाद करना चाहते थे क्योंकि यह उसकी वजह से ही हो सका था। बिलवासी जी ने लाला से कहा कि यह सब बाद में करना पहले अब यह अपने पाँच सौ रुपये जरा संभालकर व गिनकर रख लीजिए।

रुपया अगर अपना ---------- चैन की नींद सोए।

रुपया अगर अपना हो, तो उसे संभल कर रखने में एक अलग ही सुख की प्राप्ति होता है और मनुष्य उस समय अपने आप ही उसे इस्तेमाल करने की सोचता रहता है। लाला झाऊलाल ने जैसे ही पैसा संभाल कर रखा और ईश्वर का धन्यवाद करते हुए ऊपर देखा। तब तक बिलवासी जी वहाँ से चले गए थे।

उस दिन रात में बिलवासी जी को देर तक नींद नहीं आई। वे चादर लपेटे चारपाई पर ऐसे ही पड़े रहे। करीब एक बजे वे अपने बिस्तर से उठे। उन्होंने धीरे, बहुत धीरे से अपनी सोई हुई पत्नी के गले से सोने का छल्ला निकाला जिसमें एक ताली बँधी हुई थी। फिर उसके कमरे में जाकर उन्होंने उस ताली से संदूक खोला और उसमें चुपचाप पैसे रख दिए। जो पैसे वे लाला की मदद के लिए लाए थे वे अपनी पत्नी को बिना बताए उसके संदूक से निकाल कर लाए थे। यही उनका राज था जो केवल वे और उनका ईश्वर ही जानते थे।

बिलवासी जी ने जो ढ़ाई सौ रूपए लाला की मदद के लिए निकाले थे उन्होंने उन रुपयों को उस संदूक में रख दिया और उसे बंद कर दिया। फिर वे बिना कोई आवाज़ किए लौटकर आए और ताली को उन्होंने पहले की तरह अपनी पत्नी के गले में डाल दिया। सारा काम सफलता पूर्वक हो जाने के बाद उन्होंने हँसकर अँगड़ाई ली और अपनी जीत की खुशी मनाते हुए सो गए और दूसरे दिन सुबह आठ बजे तक चैन की नींद सोए रहे।

प्रश्न - उत्तर (कहानी की बात)

प्रश्न3: अंग्रेज़ के सामने बिलवासी जी ने झाऊलाल को पहचानने तक से क्यों इनकार कर दिया था? आपके विचार से बिलवासी जी ऐसा अजीब व्यवहार क्यों कर रहे थे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: अंग्रेज़ के सामने बिलवासी जी ने झाऊलाल को पहचानने से इनकार कर दिया क्योंकि अंग्रेज़ का क्रोध शांत हो जाए और अंग्रेज़ को ज़रा भी संदेह न हो कि वह लाला झाऊलाल का आदमी है। तथा वह अपनी योजना पूरी करना चाहते थे जिससे पैसे की व्यवस्था हो सके।

प्रश्न4: बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध कहाँ से किया था? लिखिए।

उत्तर: बिलवासीजी ने रुपयों का प्रबंध अपने ही घर से अपनी पत्नी के संदूक से किया था।

प्रश्न - उत्तर (कहानी की बात)

प्रश्न5: आपके विचार से अंग्रेज ने यह पुराना लोटा क्यों खरीद लिया? आपस में चर्चा करके वास्तविक कारण की खोज कीजिए और लिखिए।

उत्तर: अंग्रेज़ को पुरानी ऐतिहासिक चीज़ें इकट्ठा करने का शौक था। ऐसा इसलिए कह सकते है क्योंकि दुकान से पुरानी पीतल की मूर्तियाँ खरीद रहा था। अंग्रेज़ ने बिलवासी के कहने पर लोटा, अकबरी लोटा समझकर 500 रूपए में खरीदा।

अनुमान और कल्पना

प्रश्न1: "इस भेद को मेरे सिवाए मेरा ईश्वर ही जानता है। आप उसी से पूछ लीजिए। मैं नहीं बताऊँगा।" बिलवासी जी ने यह बात किससे और क्यों कही? लिखिए।

उत्तर: 'बिलवासी' जी ने यह बात 'लाला झाऊलाल' से कही क्योंकि बिलवासीजी ने रुपयों का प्रबंध अपने ही घर से अपनी पत्नी के संदूक से छिपाकर किया था इस रहस्य को वह 'झाऊलाल' के सामने खोलना नहीं चाहते थे।

क्या होता यदि

प्रश्न1: क्या होता यदि अंग्रेज़ लोटा न खरीदता?
उत्तर: यदि अंग्रेज़ लोटा नहीं खरीदता तो बिलवासी जी को अपनी पत्नी से चुराए हुए रूपए लाला झाऊलाल को देने पड़ते। अन्यथा झाऊलाल अपनी पत्नी को पैसे नहीं दे पाते और अपनी पत्नी के सामने बेइज्जत होते।

प्रश्न2: क्या होता यदि अंग्रेज़ पुलिस को बुला लेता?
उत्तर: यदि अंग्रेज़ पुलिस को बुला लेता तो सम्भवत :लाला झाऊलाल को गिरफ्तार कर लिया जाता या उन्हें जुर्माना देना पड़ता।

प्रश्न3: क्या होता यदि जब बिलवासी अपनी पत्नी के गले से चाबी निकाल रहे थे, तभी उनकी पत्नी जाग जाती?
उत्तर: गले से चाबी निकालते समय यदि बिलवासी जी की पत्नी जग जाती तो चोरी जैसा घिनौना काम करने पर उन्हें अपनी पत्नी के

भाषा की बात

प्रश्न1: इस कहानी में लेखक ने जगह-जगह पर सीधी-सी बात कहने के बदले रोचक मुहावरों, उदाहरणों आदि के द्वारा कहकर अपनी बात को और अधिक मजेदार/रोचक बना दिया है। कहानी से वे वाक्य चुनकर लिखिए जो आपको सबसे अधिक मजेदार लगे।

उत्तर: अब तक बिलवासी जी को वे अपनी आँखों से खा चुके होते।

कुछ ऐसी गढ़न उस लोटे की थी कि उसका बाप डमरू, माँ चिलम रही हो।

ढाई सौ रूपए तो एक साथ आँख सेकने के लिए भी न मिलते हैं।

भाषा की बात

प्रश्न2: इस कहानी में लेखक ने अनेक मुहावरों का प्रयोग किया है। कहानी में से पाँच मुहावरे चुनकर उनका प्रयोग करते हुए वाक्य लिखिए।

उत्तर:1. चैन की नींद सोना - निश्चिंत सोना- कुख्यात चोर के पकड़े जाने पर पुलिस चैन की नींद सोई।

2. आँखों से खा जाना - क्रोधित होना- मालिक ने नौकर को चोरी करते पकड़कर उसे ऐसे देखा मानो आँखों से ही खा जाएगा।

3. आँख सेंकने के लिए भी न मिलना - दुर्लभ होना- हस्तकला से बनी वस्तुएँ तो आजकल आँख सेंकने के लिए भी नहीं मिलती हैं।

4. मारा-मारा फिरना - ठोकरें खाना - बेटे आलीशान घर में रहते है और बाप बेचारा मारा-मारा फिरता हैं।

5. डींगे सुनना - झूठ-मूठ की तारीफ सुनना लाला जी घर में तो भीगी बिल्ली है परंतु बाहर अपनी बहादुरी की डींगें मारते फ़िरते हैं।

-इति-

धन्यवाद